श्रीवितरागायनमः ।

श्रीउपकेश (कवला)गच्छके मुनिश्री ज्ञानसुंदर विरचित

प्रश्नमालास्तवन ।

छपावी प्रसिद्ध करनार,

जैन पाठशाला–फलोदी.

प्रथम आवृती १०००

वीर संवत् २४४२ विक्रम संवत् १९७३

भावनगर—" धी विद्या विजय " मुद्रालयमें शाह पुरुषोत्तमदास गीगाभाई पांचभायासें मुद्रित.

कीमत ०–१–०

प्रस्तावना.

प्रिय पाठको ए वात कीसीसे छीपी हुई नहीं है कि जैनी स्याद्वदी है और जैनीओका आगम भी स्याद्वद की गंभीर शेलीसे भरा हुवा है परन्तु अधुनीक समयमे कितनाक नामधारी+जैनी केवल ३२ सुत्रकाही मान बेठ है इसीका मुख कारण श्रीजिन प्रतिमाको वन्दनीक पुजणीक नही मानणाकाही है उनि महनुभावांसे पुछा जाता है क्या ३२ सुत्र सच्चा हे बाकी जुठा है इसपर कितनेई केहते है की बाकी सुत्रांमे मूर्ती का अधिकार पीछेसे मीला दीया है.

प्रिय! जब ३२ सुत्रांमे ही मुर्तीका अधिकार है तो फेर अन्य सुत्रां मे पीछेसे मिला दिया किस वास्ते केहेते है। और क्या साबुती है कितनेक मुर्ती उत्थापक केहते है कि ३२ सूत्रका मूल पाठमे तो मुर्तीपुजा हे नही और टीका निर्युक्ती आदिमे हे वो हम नही मानते.

प्रिय! ३२ सुत्रांका मूल पाठमे मुर्ती पुजाका अधिकार अछी तरह से श्रीगणधर भगवान ने फुरमाया है वो हमारी बणई (गयवर विलास) पुस्तकमे स्पष्ट बतला दिया है; अगर आप पांचगी नही मानते हो इसका क्या कारण है.

(पुर्व पक्ष) मुल ३२ सुत्रांसे पांचागीमे कीतनेही बोल अमीलते है.

(उत्तर पक्ष) प्रिये जैन आगममे ऐसी बात कीसी पांचागी प्रकर्ण

---

* स्थानकवासी तैरापन्थी.

मे नही है कि ३२ सुत्रांसे न मीले परन्तु उनिकी गंभीर शेलीको पीछाणा और अंतरंगत रेस्व को समजना ए बहुतही मुसीकल है.

परन्तु समयक ज्ञान शुन्य मुर्ती उत्थापक केवल अज्ञान के मारा अपणा मीथ्या कदाग्राके वसीभुत है के पुर्व धारी आचार्य के वचनको उत्थापन कर्ते है उनिसे हम ईसी स्तवन द्वारे प्रश्न पुछते है कि जो तुम ३२ सूत्र मूल पाठ मानते है तो ३२ सुत्रांमे एसे एसे बोल है कि वीगर पांचागी समाधान नही होता है हमारे तो पुर्व आचार्य ईनी बोलाका पांचागी द्वारे समाधान कर गया है.

अब जो पांचागी नही माननेवाला से हमारा केहना हे की ३२ सुत्रांका प्रश्न ३२ सुत्रांका मूल पाठसे समाधान कर छापा द्वारे प्रगट करे नही तो अब आपका ३२ सुत्र ही मानने का कृतघ्नी रंग चलणेका नही है।

प्रिय आप लोक पांचांगी आदि प्रकरणसे ही आपकी आजीवका चलाते हो और उनि पांचांगीको नही मानणा ए क्या कृतघ्नीपणा नही है तो क्या हे स्वं विचार कर लेणा हम आपके हितार्थी शीषसा देत है कि आप आपकी आत्म कल्याण करणा चाहते होते जैन आगम पांचांगी संयुक्त प्रमण कोरे अस्तु.

हमारे ढुंढीय और तेरापंथी भाइ ऐसा न करे कि हम जो ३२ सुत्रांका मूल पाठसे प्रश्न पूछा है जीसीका उत्तर अङ्ग बङ्गसे दे देवे हम मूल सूत्र से लेणा चाहते है वो मुल ३२ सुत्रांसे ही देवे जो मुल सुत्र से उत्तर नही देवेगा तो आँम तोरसे जाहर होजावेगा कि जैन आगम की छोडके केवल ३२ सुत्र मानणा ए ऐक भद्रीक जीवांके लीए जाल रचा है परन्तु अब आपकी ढोल जीतनी पोल वीद्वतासे छीपी हुई नही है इतनाही केहके प्रस्तावना समाप्त करता हुं. श्रीरस्तु । **लेखक.**

श्री रत्नप्रभसूरि गुरुभ्यो नमः

॥ श्री प्रश्नमाला स्तवनः ॥

॥ दोहा ॥

मंगळ शासन नाथजी, मंगळ गौतम स्वांम ।
मंगळ वाणी जिन तणी, वंछीत सीजे काम ॥ १ ॥
स्याद्वाद गंभीरता, जाणे पूर्वधार ।
पंचागी जीणने रची, खोल दीया सब तार ॥ २ ॥
नवो पंथ प्रगट हुवो, माने सूत्र बत्रीस ।
भोळा लोको आगले पूरे मन जगीस ॥ ३ ॥
पूछ्यासे ती, इम कहे, प्रकरण टीका माय ।
मीलता, बोलज को नहि, तीणसुं मानो नाय ॥ ४ ॥
तिण कारण नीचे लखुं, बत्तीस सुत्रका बोल ।
विनयां चंगी दीजीये, मूल सूत्रथी खोल ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

आदर जीव क्षमा गुण आदर । एदेशी ।

मूल सूत्रथी उत्तर आपो, के करो पंचांगी परमाणजी ॥एटेक॥
सत्तावनसो कह्या समवायांग, मल्ली मनप्रजव जाणजी ।
छट्ठे अंगे कह्या आठसो, आ जिनवरकी वाणीजी ॥मु॥१॥
गुणसठ सो कह्या अवधीनाणी, समवायांगरो लेखजी ।
दोय सहस मल्ली जिनवरके, ज्ञाता सूत्र लो देखजी ॥मू॥२॥
ज्ञाता में कृश्न की राणी, बत्तीस सहसको मानजी ।
सोला सहस कही ते देखो, ओ अन्तगडको ज्ञानजी ॥मू॥३॥
च्यार ज्ञान केसी स्वामी के, रायपसेणी जोयजी ।
तिन ज्ञान उत्तराध्ययन बोले, केसी स्वामी होयजी ॥मू॥४॥

विराधी पहेले देवलोके, भगवतीमें वातजी ।
ज्ञातामें गाइ ईसान देवी, आठुंइ एक साथजी ॥मू॥५॥
उववाइमें तप देखो, उत्कृष्टा जोतषी जायजी ।
भगवतीमें, तां मली, तापस, ईसांण इंद्रके हायजी ॥मू॥६॥
उववाइ छट्ठे देवलोके, जावे चोद पूर्वना धारजी ।
कार्तिकशेठ पहेले देवलोके, भगवतीजीमें तारजी ॥मू॥७॥
तीन करण योगथी टाले, श्रावक कर्मादानजी ।
उपासकमें हल निवाडा, सगडाल आनंद गुणवानजी ॥मू॥८॥
वेदनी कर्मकी बार मूहूर्त, जगन थिति पन्नवण जाणजी ।
तेहिज अंतर्मूहुर्त दाखी, उत्तराध्ययन की वाणजी ॥मू॥९॥
भगवतीमें बाल मरणथी, वदे अनंत संसारजी ।
ठाणायंगमें दो मरणकी, आज्ञा दी करतारजी ॥मु॥१०॥
चौदे पूर्व महाबल भण्यो, भगवती ब्रह्म देवलोकजी ।
छट्ठाथी नीचे नहि जावे, उववाइ सुत्र अवलोकजी ॥मू॥११॥
लसण मांहे जीव अनंता, उत्तराध्ययनमें सारजी ।
प्रत्तीक काय पन्नवणा बोले, पंचागी लो धारजी ॥मु॥१२॥
दोय भाषारी आज्ञा नहि, दश वकालक जाणजी ।
चार भाषा अलराद्धी बोली, पन्नवणाकी वाणजी ॥मू॥१३॥
दश विकालक चित्रामकी नारी, नहिरे हे अणगारजी ।
ठाणयंग के पंचमे ठाणे, साधु आर्जीयां रेवे लारजी ॥मू॥१४॥
रोग आयो औषद नहि करणो, उत्तराध्ययनमें लेखजी ।
वरिप्रभुजी औषध कीनो, भगवती लो देखजी ॥मू॥१५॥
दशवैकालिक भोजन करवो, एक भक्त को मानजी ।
विकट भोजी तपसी साधु, ओ कल्पसुत्रको ज्ञानजी ॥मू॥१६॥

अल्पछटां जावे गोचरी, कल्पसुत्रमें जाणजी।
वर्षतां बीलकुल नहि जावे दशविकालीक वाणीजी ॥मू॥१७॥
भगवतीमें अणसण कीधो, कदाचित करे आहारजी।
बीजो सुत्रव्रत भंग को, लागे दोष अपारजी ॥मू॥१८॥
पन्नवणामें स्त्री वेदका, स्थितिका पंच आदेशजी।
सर्वज्ञका मतमे किम चाले, पीण छे सुत्रनी रेसजी ॥मू॥१९॥
राजपिंड साधु नहि लेवे, ठाणायांगमें जाणजी।
देवकी वहेराया छे साधुने, अन्तगडकी वाणीजी ॥मू॥२०॥
पचवीश जोजन उपद्रबनहि होवे, समवायांग अतीसय अधीकारजी।
अभंग सेणीदी सुली चडीया, विपाक सुत्र मुजारजी ॥मू॥२१॥
दोय साधु समोसरण मांये, बाल्या गोसालो आणजी।
लोहीठांण हुवो भगवंत के, आ भगवतीनी वाणीजी ॥मू॥२२॥
समवायांगमें श्रावक केरा, चैत्य हुंडीमें होयजी।
उपासक सुत्रमें देखो, पाठ न दीसे कोयजी ॥मु॥२३॥
अल्प आयुषो ठाणायंगजी, देदो खीलो आहारजी।
अल्प पापने बहु निर्जरा, भगवती सुत्र मंझारजी ॥मू॥२४॥
पंच महानदी नही उतरणी, ठाणायंगरो लेखजी।
मार्ग जातां नदी उतरे, आचारांग लो देखजी ॥मू॥२५॥
चोमासामें विहार नहि करणो, बृहत् कल्पकी साखजी।
पंचमें ठाणे विहार करणा को, वितराग गया भाखीजी ॥मू॥२६
त्रिविधे २ हिंसा नहि करणी, आचारंग दसवि कालजी।
नंदि उतरे नावे बेठे, आचारंगमें भालजी ॥मू॥२७॥
कल्पसूत्र साधु, वर साले विगे नहि लेवे वारमवारजी।
सुयगडांगमें निषेध कीनो, नहि लेवे अणगारजी ॥मू॥२८॥

सचित्त मिश्र वस्तु नहि खाणी, दश विकालिक जाणजी ।
आचारंगमें लुण खावणकी, आ जीनवरकी आणजी ।मू।२९।
भगवती सुत्रमें देखो, निबडो तिखो होयजी ।
कडवो कह्यो अध्ययन चोत्तिसे, उतराध्येन लो जोयजी ।मू।३०।
जुठ बोलवारा त्यागज कीना, दशविकालिक जाणजी ।
आचारांग 'मृगादिक' तांइ, जुठ बोले दया आणजी ।मू।३१।
समवायांग तेइस तीर्थंकर, सूर्य उगो केवळ ज्ञानजी ।
नेमीश्वर पाछले पोहरे, दशाश्रुत स्कंध पीछणजी ।।मू।।३२।।
सूर्य उगतां ज्ञान उपनो, तेवीश तीर्थंकर जाणजी ।
पाछले पोहेर मल्ली जीनवर, ए ज्ञातासूत्रकी वाणजी।मू।३३।
दश प्रकारे वैयावच्च बोली, उववाइमें लेखजी ।
हरकेसीकी वैयावच्च करतां, जक्ष ब्राह्मण हणीया देखजी।मू।३४।
प्राणभूत जीव सत्त्वने, दुःख नहि देणो कोयजी ।
प्रत्यक्ष मांहे ब्राह्मणहणीया,वैयावच्चकीणविध होयजी ।मू।३५।
ठाणांयंगे मल्ली जीनवर, दिक्षा लिवी जीणा सातजी ।
छसो जीण साते निकल्पा, आ ज्ञातासुत्र की वातजी ।मू।३६।
मल्ली जीनने केवळ उपनो, पछी गंत्री दीक्षा जाणजी ।
सात जीण साथे दीक्षा, आ ठाणायंगकी वाणजी।।मु।।३७।।
पसु पंडिग रहित होसेज्जा, उत्तराध्ययन रहे अणगारजी
साधु साध्वी भेला रहे, ठाणायंग सुत्र मंजारजी ।।मु।।३८।।
निषेद प्रशंसा नहि करणी, सुयगडांग सावद्य दानजी ।
एकांत पाप कह्यो जीनवरजी, आ भगवती को ज्ञानजी ।मु।३९।
नन्दन वन पांचसो योजनको, जंबुद्विप पन्नति वायजी ।
बलकुठ शहस जोजनको तेमे केम समायजी ।।मु।।४०।।

पांचसो जोजनकी चोडादा रव्या, गजदंता दोय जाणजी ।
उपरकुट शहस जोजनको, जंबुद्विप पन्नति वखाणजी ॥मु॥४१॥
रुषभ कुटको पहेला पणौ, आठ जोजनको मुलजी ।
पाठांतर बार जोजनको, जंबुद्विप पन्नति सु मूलजी ॥मू॥४२॥
अर्द्ध भरतकी जीवा दाखी, जंबुद्विप पन्नति मजारजी ।
नव सहस सातसो अडतालीश, बारा कला विचारजी ।मु।४३।
चोथे अंगे तेहीज जीवा, नव हजारको मानजी ।
पंचागी वीना ते कीम जाणे, हिरदे आणो ज्ञानजी ॥मु॥४४॥

चोथे अंगे जगन थिति, बत्तीस सागर बीजे वीमाणजी ।
पन्नवणमे ईगतीस सागर, जघन्न थिति परमाणजी ॥मु॥४५॥

रुषभ वीरके वीचे समवायांग, अंतरो कोडा कोड एकजी ।
बयालीस सहसवर्ष छे उणा,जंबुद्विप पन्नति लो देखजी।मु।४६।
साधु आधा कर्मी आहार भोगवे, सुयगडांग बोले एमजी ।
कर्मोथी लेपे नहि लेपे, दो वता मीले केमजी ॥मु॥४७॥
भगवती सुत्रेम देखो, आधाकर्मी अधिकारजी ।

चउगतीको कह्यो पोवणो, रुले बहुत संसारजी ॥मु॥४८॥
उणो सहस तेतीस सूर्य, चक्षु फर्सेचोथे अंगजी ।
बत्तीस सहस एक जोजन जाजे, जंबुद्विप पन्नति चंगजी ।मु।४९।
सतक आठ उदेसो दशमौ, भगवती अंग पेछाणजी ।
पोग्गले पोगाली कयो जीवने, तेहनो सु परमाणजी ॥मु॥५०॥
सोला नाम मेरुका चाल्या, समवायांगमे जोयजी ।
आठमो प्रीयदर्शन दाख्यो, चौदमो उत्तर होयजी ॥मु॥५१॥
तिमाहिज जंबुद्विप पन्नति, मेरुका सोला नामजी ।
आठमो सलोचय चौदमो उत्तम, ओपचांगीको कामजी॥मु॥५२॥

अण आहारी दोसमा थीति, पन्नवण पीछाणजी ।
तीन समा भगवती बोले, आजीनवरकी आणजी ॥मु॥५३॥
चर्म तीर्थंकर कल्पसुत्रे, बेयालीस वर्ष दिक्षा संगजी ।
बायालीस वर्ष जाजेरा, देखो चोथो अंगजी ॥मु॥५४॥
जीवा भिगम रुचक द्विपको, कह्यो असंख्यातो मानजी ।
ठाम दुणो संख्यातो आवे, जोवो जीनवरको ज्ञानजी ।मु।५५।
मेरु कंड अडतीस सहसको, समवायांगमें होयजी ।
तेहिज छत्तीस सहस वतायो, जंबुद्विप पन्नति जोयजी ।मु।५६।
इगसठ सहस जोजनको जाणे, समवायांग दुजौ कांडजी ।
तेसठ हजार जोजनको देखो, जंबुद्विप पन्नतिमांडजी ।मु।५७।
नव हजार नवसो जोजनको, नन्दनवन चोथो अंगजी ।
चौपन जोजन जाजेरो दाख्यो, जोवो पंचमे उपांगजी ।मु।५८।
दशमे अंगे बत्तीसइद्र, अडतालीश पांचमे उपांगजी ।
चौष्ट कह्या दुजेठाणे, देखो तीजे अंगजी ।मू।५९।
सिद्धांकी अवगणा उववाइ, बत्तीस अंगुलको मानजी ।
जगन्य सात हाथको सीद्धे, ओ भगवतीको ज्ञानजी ।मु।६०।
सीद्ध सीलाथी उणो जोजन, सीद्ध क्षेत्र भगवती जाणजी
उववाइमे पुरो जोजन, करो पंचागी परमाणजी ॥मू॥६१॥
छठीनरकका मध्य भागसु, धणोदधिनो चरमांतजी ।
गुणीयासी सहस्रसमवायांग बोले, श्री जीनवाणी सत्यजी।मु।६२।
जिवाभिगम गिणती करतां, इठितर सहस्रजोजन परमाणजी ।
पंचागी विनते किम जाणो, हिरदे आणो नाणजी ॥मू॥६३॥
रेवंतिथी जेष्टातांइ, तारा अट्ठाणु होयजी ।
गीणती करतां सत्ताणुं आवे, समवायांगलो जोयजी ॥मू॥६४॥

नव जोजन घ्राणेंद्रि विषे, पन्नवणामे जाणजी ।
च्यार पांचसो जोजन दाखी, दुजे उपांग परमाणजी ।मू।६५।
भगवतीमें पलकालको, कुवा तणो कह्यो मानजी ।
तेंथी फर्क घणेरो दिसे, अणुयोग द्वारको ज्ञानजी ॥मु॥६६॥
असुर अवधि ज्ञान जग नथी, पचीस जोजन चोथे उपांगजी ।
अंगुल भाग असंख्यो दाख्यो, देव सुधर्मा चंगजी ॥मु॥६७॥
बादर तेउ मनुष्य लोकमे, पन्नवणा पेछाणजी ।
देखो अग्नि कही नरकमें उतराध्ययन ओगणीसमे जाणजी।मु।६८।
शोरीपुरमें नेमीनाथजी, कह्या, उत्तराध्ययन मजारजी ।
दिक्षा लेतो काहि द्वारका, मुळथी काडो सारजी ॥मु॥६९॥
शौरीपुर पूर्वमें जाणो, द्वारका पश्चिम दिस जाणजी ।
राम कृश्न वंदण कर चाल्या, आ जीनवरकी वाणजी ।मु।७०।
सात कुलधरका नाम बताया, ठाणांयंग ठाणो सातजी ।
दश कुलधरक कह्या दशमे ठाणे, मुळथी मेलो वातजी॥मू॥७१॥
तिहीज आवती उसपणी जाणे, कुलधरको अधिकारजी ।
सातमे दशमे ठाणो देखो, उपरवत् विचारजी ॥मु॥७२॥
सुधर्म इशान कह्यो बरोबर, जिवाभिगम जोयजी ।
भगवती सूत्रमे देखो, इशान उंचो होयजी ॥मु॥७३॥
तिर्छी गति कही असुरकी, नंदीश्वर दीप मजारजी ।
राजधानी असंख्या दीपे, भगवती अंग विचारजी ॥मु॥७४॥
माहावेदना, समद्रष्टी, नेरीयां, पहेले सतके थायजी ।
सतक अठारे उदेशो पांचमो, अल्प वेदना कहेवायजी ।मु।७५।
बारमो तीर्थंकर कह्यो कृश्नने, अंतगड अधीकारजी ।
जिनवर हासी तेरमो देखो, समवायांग सूत्र मोजारजी॥मु॥७६॥

मनुष्य तिर्यंचको काल वेक्र, अंतर्मूहूर्त पांचमे अंगजी ।
भीन्नमूहूर्त च्चार बताया, जोवो तीजे उपांगजी ॥मु॥७७॥
जगन्न अरादी रत्न त्रीयकौ, नव करे सत अठजी ।
नर देवे उत्कृष्टो रेवे, अद्ध पुद्गल मठजी ॥मु॥७८॥
भगवतीमें निद्रा लेतो, सात आठ बंदे कर्मजी ।
तीजा पहोरे निद्रा लेणी, उत्तराध्ययनमें मर्मजी ॥मु॥७९॥
असंघेणी कह्या नेरीया, जोवो तीजे उपांगजी ।
उत्तराध्येयन सुयगडांग देखो, मांस खपावे करे तंगजी॥मु॥८०॥
दिव्य संघेणी क्या देवता, लेवो पन्नवणा देखजी ।
असंघेणी जाणो देवता, जीवाभिगम को लेखजी ॥मु॥८१।
भगवती असन्नी मनुष्यको, अडतालीस मूहूर्त अवठीया कालजी।
चोवीस मोहुर्तको, वीहरो, बतायो, पन्नवणामें नालजी॥मु॥८२।
ब्रह्म कल्प विमण ठाणायंग, रक्त स्वयंम नीलवर्ण जाणजी ।
रेक्त पेत सुकल बतायौ, जीवाभिगम पिछाणजी ।मू।८३।
समवायांग भगवती मांहे, शक्र स्तवन अधींकारजी ।
दोनु पाठमे फर्कज दीसे, पंचागी लो धारजी ॥मु॥८४॥
पांचसो तीस भेद बताया, पुद्गल पन्नवणा लेखजी ।
चारसो ब्यासी दाख्या जीनंवर, उत्तराध्ययन लो देखजी।मु।८५।
जघन कलमेषी, सुधर्म, जावे, पन्नवणा की वायजी ।
भगवती सुत्रमे देखो, भूवन पतीमें जायजी ॥मु॥८६॥
सारण करतो में नहि जाणुं, कल्प सूत्र परमाणजी ।
आचारंगमें कहेमे जाणुं, आ वीर जीणदकी बाणजी ॥मु॥८७॥
पहेला देवने पछे मनुष्यने, धर्म कह्यो जगनाथजी ।
अछेरामे वाणी निष्फळ, मेलो मुलके साथजी ॥मु॥८८॥

योग बर्तायो हिंसाहुवे, भगवतीमें वातजी ।
आज्ञादि सुभ योगकी प्रभु, मेलो उववाइ सातजी ॥मु॥८९॥
बारा व्रत लेसुं इम बोल्यो, आणंद उपासक जोयजी ।
आठव्रत उचरीयां जाणौ, अतिचार बारेका होयजी ।मु।९०।
वनस्पति संघट्टो नहि करणो, भगवतीमे लेखजी ।
झाड पकड खाडासु नीकले, आचारंग लो देखजी ॥मु॥९१॥
समय मात्र प्रमाद न करणो, उत्तराध्ययन दशमे जाणजी ।
तीजी पेहेरे निद्रा लेणी, छावीसमे अध्ययन परमाणजी ।मु।९२।
गृहस्तीने कठण नहि बोले, निशीथ सूत्रमें लेखजी ।
केसी कहे मुढ तुच्छ प्रदशी, रायपसेणी लो देखजी ॥मु॥९३॥
निसीथमे साधुने वरज्यौ, कोइ चीज देखवा जायजी ।
विपाक गौतम मृगा लौढो, देखो जीनवर भायजी ।मु।९४॥
गृहस्तीसे प्रचो नहि करणो, दश विकालीक जाणजी ।
गौतम अंगुली पकडी अमंतो, आ अंतगडकी वाणजी ।मु।९५।
छ पुरुष सातमी स्त्री, अंतगड अर्जुन जाणजी ।
पुरुष सातमो छे कही स्त्री, प्रगट पाठ परमाणजी ॥मू॥९६॥
इत्यादि बहु बोळवालीया, मूलसूत्रमें नाळजी ।
स्याद्वादकी सेली विना, तेकिम जाणे बाळजी ॥मु॥९७॥
जो नहि माने ते पंचागी, तासुं कहीये तेमजी ।
मूल पाठथी उत्तर आपो, जब बोले पाधरा एमजी ॥मु॥९८॥
परमपरा नवले धारणा, टबा अर्थमे जोयजी ।
मत यक्षारा वार्ता सुणतो, आश्चर्य उपजे मोयजी ॥मु॥९९॥
लुंकाजी मजुरी करता, चोरीसे उलटो ज्ञानजी ।
परंपरा तुमे केहनी चालो, हिरदे आणो ज्ञानजी ॥मू॥१००॥
टबा वालो हेळा पाडे, में कीयो टीका अनुसारजी ।

टबो माने टीका नहि माने, वे डुबे डुबावण हारजी॥मू॥१०१॥
भद्रबाहु स्वामी वृत्ति कीनी, ते बहु कठण जाणजी।
तेनी सुगम करी आचारज, ते वृत्ति परमाणजी ॥मु॥१०२॥
वादी कहे वातो पंचागी, गइ कालमें वीतजी।
नवी रची आचारज ज्यारी, कीम आवे प्रतीतजी ॥मु॥१०३॥
सुत्र रह्या "निर्युक्ति" वीती, तेहना सुपरमाणजी।
आचारज रच्या नहि मानो, आगो सुणजो वाणजी॥मु॥१०४॥
तीन छेद भद्रबाहु रच्या, पन्नवणा श्यमाचारजी।
देवर्द्धी गणीजी नंदी बणाइ, दश विकालीक सज्जंभव गण·
धारजी ॥मु॥१०५॥
धर्म धूरंधर पुर्व धारी, टीका करतां जाणजी।
काम पडे जद बोल चालको, सरणां लेवो आणजी ॥मू॥१०६॥
जैनी नाम धरावे फोगट, जिन आगमथी दूरजी।
तेहिज भाची पंडत भाजो, कृतघ्नीने क्रुरजी ॥मू॥१०७॥
मुल सहीत पंचागी मानो, दो बहु आदर मानजी।
स्याद्वादकी शैली समाजो लो गुरु गमशे ज्ञानजी ॥मू॥१०८॥

॥ कलस ॥

नाभि रायकुल वंसभुसण, मारुदेवा मायजी।
"अष्टापद" पर आप सिध्या, गयवर प्रणमे पायजी॥
एकादशी अषाढ सुकल, उगणीश बहुत्तर सालजी।
देस मरुधर गांव तिवरी, प्रभु जोडी प्रश्नमालजी ॥१॥

॥ इति श्री प्रश्नमाला संपूर्ण ॥

इन प्रश्नोका ऊत्तर ३२ सुत्र मानणेवाला (ढुंढीया या तेरापन्थी) दोतु एक मासके अंदर प्रगट करे ताके आपके अंध सरद्धालु मत पक्षीयां के मीथ्यात्वका नसा फोरन् उत्तर के ४ समक्ति रत्नकी प्राप्ति हो अस्तु.